वीर सावरकरः हिन्दुत्व एवं राष्ट्रीयता

मनोज कुमार कैन

सारांश

आजादी के 75 वर्षों के बाद भी हमारा देश उन वीर जवानों को याद करके उन्हें सम्मानपूर्वक सलामी और श्रद्धांजलि देता है जो इतिहास के पन्नों में आज भी जीवित हैं। हम कृतज्ञ हैं उन शहीदों के जिनकी बदोलत आज हम स्वतंत्र भारत में सांस ले पा रहे हैं। धन्य है यह भूमि जिसने ऐसे क्रांतिकारियों को जन्म दिया जिन्हें याद करके आज भी हमारा सीना गर्व से फूला नहीं समाता। ऐसे ही उन्हीं वीरों में एक वीर रहें हैं जिन्हें उनके द्वारा दिए गए बलिदानों के आधार पर आज के युगपुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के नाम से जाना जाता हैं। सावरकर जी ने अथाह यातनाएं झेलते हुए भी हिंदुत्व का जो पाठ पढ़ाया वह आज आजाद भारत की नींव बन चुका है। लेखन शैली के महान् विज्ञाता आज अपने लेखों के माध्यम से भारत भूमि को गौरवांवित कर रहे हैं।

श्री विनायक दामोदर सावरकर जी, जिनका इस पावन भूमि पर जन्म लेना ही एक प्रताप के समान रहा, जब 28 मई, सन् 1883 दिन सोमवार को दामोदर पंत सावरकर जी ने अपने नवजात पुत्र को देखा तो उनका मुख अनायास ही खिल उठा। वे महान पुरुष अपने प्रारंभिक विद्यार्थी जीवन से ही स्वाधीन भारत के स्वप्न देखने लगे थे। ऐसे वीर नायक स्वयं में एक अनोखी छवि लिए, स्वाधीनता की राह पर चल दिए। इनका जीवन ही अपनी मातृ भूमि के लिए न्यौछावर रहा। इनका दिल हमेशा हिन्दुत्व भावना लिए धड़कता रहा और ऐसा प्रतीत होता है कि आत्मीय गुणों से भरपूर वीर, साहसी नायक जी भारतवासियों को ही अपनी रीड़ समझते थे। साथ ही निर्भीकता की मिसाल भी रहे, जहां अपनी शिक्षा के साथ साथ स्वाधीन भारत की इच्छा उनके रग रग में खून बनकर दौड़ती रही। असंभव को भी संभव बना देने का जज्बा लिए, यातनाओं को झेलते हुए, कागज कलम ना भी साथ हो तो भी कोयले व पत्थर के इस्तेमाल से अपने भावों को दुनिया तक पहुंचाते हुए हिंदुत्व की रक्षार्थ हेतु संघर्षरत रहे।

जिस प्रकार आचार्य चाणक्य अपने लक्ष्य हेतु अटल व अडिग रहते थे, सावरकर जी भी अपने मन मस्तिष्क में सिर्फ अपना एक ही लक्ष्य रखते थे– देश के प्रति सच्ची कर्तव्यनिष्ठा वीर सावरकर जी अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूरी निष्ठा से एकाग्रचित होकर लगे रहे। सावरकर जी मात्र स्वाधीनता संग्राम के यशस्वी व तेजस्वी सेनानी ही नहीं थे अपितु वे एक महान चिंतक, कवि, लेखक, ओजस्वी वक्ता व एक दूरदर्शी राजनेता भी थे। यह शब्द जब भी हमारे स्मरण में आता है तो हमारे सामने एक ऐसी छवि उभर कर आती है जहां एक अदम्य साहस व देशभक्ति से ओतप्रोत इतिहास की झांकिया चल रही होती हैं।

"वीर सावरकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक ऐसे योद्धा है, जिनके क्रान्तिकारी कार्यो और विचारधारा से क्षुब्ध होकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें दोहरे आजीवन कारावास की सजा दी। सक्षम सजा भोगते हुए भी वे जेल से क्रान्ति के

गुप्त संदेश देश के कोने–कोने तक भेजते रहें।" वीर भूमि महाराष्ट्र के नासिक जिले में भंगूर नाम का एक छोटा–सा ग्राम है। इसी गाँव के पावन वातावरण में चितपावनवंशीय ब्राह्मण श्री दामोदर पंत सावरकर निवास करते थे। स्वभाव से धार्मिक विचारों के दामोदर पंत सावरकर और उनकी पत्नी राधाबाई दोनों ही श्रीराम, कृष्ण के उपासक परमभक्त तथा धर्मग्रन्थों के प्रति श्रद्धा के वशीभूत थे। वे रोजाना रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया करते थे। 28 मई, सन् 1883, दिन सोमवार! इसी तिथि को दामोदर पंत सावरकर ने अपने नवजात पुत्र को देखा तो बच्चे को देखकर उन्हें एक विचित्र अनुभूति यह हुई कि उनके परिवार में जन्मा यह बालक विलक्षण होगा। बच्चे के तेजस्वी मुखमण्डल को देखकर यही एहसास भी हो रहा था। पिता की यह अनुभूति आगे चलकर सत्य सिद्ध हुई, क्योंकि वही बालक आगे चलकर भारतीय स्वाधीनता संग्राम का जन्मजात योद्धा वीर सावरकार के नाम से इतिहास में अमर हुआ।

"युगपुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर एक हिन्दुत्ववादी राजनीतिक चिंतक और स्वतंत्रता सेनानी रहे हैं। अपने इन विचारों की अभिव्यक्ति करने में उन्होंने कभी किसी भी प्रकार का संकोच नहीं किया। वह अपने प्रारंभिक विद्यार्थी जीवन से ही स्वाधीन भारत के स्वप्न देखने लगे थे। उच्च शिक्षा के लिए ब्रिटेन जाने पर भी स्वाधीन भारत की इच्छा उन्हें क्रान्तिकारियों के संपर्क में ले गयी। भारत में जीवन पर्यन्त कठोर कारावास का दण्ड मिलने पर काला पानी भेजे गए, किन्तु काले पानी की नारकीय यंत्रणाएँ भी उन्हें अपने लक्ष्य से विचलित नहीं कर सकी। वीर विनायक दामोदर सावरकर भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के एक अद्वितीय विभूति थे। मातृभूमि की स्वाधीनता, अखण्डता, सम्पन्नता के लिए उनका त्याग, संघर्ष एवं अदम्य, उत्साह सर्वथा अनुपम, अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रहा है। अपने बाल्यकाल से वह मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में कूद पड़े थे।"

लोकमान्य तिलक द्वारा संचालित 'केसरी' नामक पत्र में प्रकाशित लेखों को पढ़ कर विनायक जी के हृदय में राष्ट्रभक्ति की भावनाएं हिलोरें लेने लगीं। लेखों व कविताओं के माध्यम से ही उन्होंने जाना कि किस प्रकार हमारा प्यारा देश भारत अंग्रेजों की दासता के चंगुल से घिरा व शोषण का शिकार हो रहा था। तभी से उन्होंने भी अपनी कविताओं व लेखों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में तहलका मचा दिया। वीर सावरकर क्रान्तिकारी देशभक्त थे जिन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली पूना में 7 अक्टूबर (विजय दशमी) 1905 को जलाई थी।

वीर सावरकर प्रथम भारतीय लेखक थे जिन्होंने अंग्रेजों द्वारा गदर कहे जाने वाले संघर्ष को (सन् 1857) 'प्रथम स्वातंर्त्य समर' प्रमाणित करते हुए सन् 1908 में '1857 का स्वातंर्त्य समर' नामक पुस्तक मराठी में लिखी। यह पुस्तक इंग्लैंड में बैरिस्टरी की पढ़ाई करते हुए विद्यार्थी जीवन के दौरान लिखी गई थी। '1857 स्वातंर्त्य समर' को प्रकाशित होने से पूर्व ही ब्रिटिश संसद ने प्रतिबंधित कर दिया था। इंग्लैण्ड पहुंचने के बाद वे लंदन में 'इंडिया हाउस' में ठहरे व साथ ही उन्होंनें वहां अपनी विचारधारा के भारतीय युवकों को एकत्रित करना शुरु किया और बाद में 'फ्री इंडिया' नाम से एक सोसायटी की स्थापना भी की। उन्होंने इटली के महान् देशभक्त मैझिनी के जीवन चरित्र के बारे में लिख कर राष्ट्रीयता की भावना को और अधिक जागृत किया। 1907 में वीर पुरुष के दवारा लंदन में ही सन् सत्तावन की अर्द्धशताब्दी मनाने का कार्यक्रम भी बड़े पैमाने पर बनाया गया। 10 मई 1907 को इंडिया हाउस में सन् सत्तावन की क्रांति के उपलक्ष्य में स्वर्ण जयंती आयोजित की गई व मंच पर महान् शहीदों के चित्र लगाए गए और साथ ही सभी भारतीयों ने भी अपने सीने व बांहों पर शहीदों के

चित्रों के बिल्ले लगाए हुए थे जिन पर लिखा हुआ था – "सन् सत्तावन के वीर अमर रहें। इन महान शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद राष्ट्रीय गान हुआ और फिर वीर सावरकर जी के उर्जावान भाषण से सभी भारतीयों में देशभक्ति की ज्वाला और जोर से धधकने लगी।" सावरकर जी ने अंदमान में कारावास के दौरान हो रहे अन्यायपूर्ण धर्म–परिवर्तन का भी पुरजोर विरोध किया। अंदमान की कालकोठरी में भी उन्होंने कुछ कविताएं लिखीं। उन्होंने मृत्यु को संबोधित करते हुए अत्यंत ही मार्मिक व देशभक्ति से पूर्ण कविता लिखी। वीर सावरकर जी अडमान जेल (काला पानी) में पहले ऐसे कैदी थे जिन्होंने काल कोठरी की दीवारों पर कंकर कोयले से कविताएँ लिखी। वीर सावरकर ने जेल की लम्बी यातनाएँ भारत की स्वतंत्रता के लिए सही, वही दूसरी ओर उन्होंने क्रान्तिकारी साहित्य भी विश्व को प्रदान किया। उनमें जन्मजात नैसर्गिक काव्य प्रतिभा थी। वे माँ सरस्वती के अनन्य उपासक थे। सावरकर जी ने साहित्य की हर विधा पर अपनी लेखनी चलाई है काव्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य एकांकी नाटक आदि।

'जौसेफ मैजिनी', मराठी में सन् 1907 में लंदन में यह ग्रन्थ लिखा। प्रकाशित होते ही अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया। सन् 1946 में प्रतिबंध हटने पर पुनः दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ । '1857 का स्वातंर्त्य समर' अंग्रेजी, मराठी, हिन्दी, गुजराती, तेलुगू और तमिल में प्रकाशित यह पुस्तक मूल रूप में मराठी में सन् 1908 में लंदन लिखी गई। प्रकाशन से पूर्व ही इसकी पांडुलिपि अंग्रेज सरकार के प्रतिबंधित कर दी, किन्तु फिर भी गुप्त रूप से यह पुस्तक अंग्रेजी में अनुदित होकर हॉलैंड में प्रकाशित हुई।

"1910 में 'अभिनव भारत' ने प्रकाशित किया। बाद में लाला हरदयाल ने अमेरिका में भी प्रकाशित कराया। फिर सरदार भगत सिंह ने गुप्त रूप से लाहौर में छपवाया। भारत के क्रान्तिकारियों के लिए यह पुस्तक पवित्र गीता थी। 'हिंदुत्व' सन् 1923 में रत्नागिरि काराग्रह में लिखा गया। जो मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला व गुजराती में प्रकाशित है। 'हिंदू पदपादशाही' यह ऐतिहासिक ग्रन्थ भी रत्नागिरि कारागार में लिखा गया। 'अंडमान की गूंज' अंडमान की काल कोठरी में लिखे गए ओजस्वी एवं मार्मिक पत्रों का संग्रह है यह सन् 1925 में प्रकाशित हुआ वीर सावरकर के साहित्य की यह विशेषता है कि वह न केवल इतिहास से प्रेरित है वरन् राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भाव को भी प्रेरित करता है। राष्ट्रवाद के उच्चतम शिखर पर ले जाकर हिन्दुत्व पर गर्व करने की प्रेरणा देता है।"

'हिन्दुत्व' एक ऐसा शब्द है, जो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए आज भी अपूर्व स्फूर्ति तथा चेतन्य का स्रोत बना हुआ है। "इस शब्द से सम्बद्ध विचार, महानध्येय, रीति रिवाज तथा भावनाएँ कितनी विविध तथा श्रेष्ठ हैं, कितनी प्रभावी तथा सूक्ष्मतम हैं 'हिन्दुत्व' कोई सामान्य शब्द नहीं है। यह एक परम्परा है। एक इतिहास है। यह इतिहास केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक इतिहास नहीं है। अनेक बार 'हिन्दुत्व' शब्द को उसी के समान किसी अन्य शब्द के समतुल्य मानकर बड़ी भूल की जाती है वैसा यह इतिहास नहीं है। वह एक सर्वसंग्रह इतिहास हैं। 'हिन्दुत्व' शब्द में एक राष्ट्र तथा हिन्दूजाति के अस्तित्व का पराक्रम के सम्मिलित होने का बोध होता है।"

'हिंदुत्व' शब्द में भारत के सम्पूर्ण इतिहास प्रतिनिधित्व करने की क्षमता अवधारणा और आदर्श, व्यवस्था और समाज, विचार और भावनाएं, जो इस नाम के इर्द–गिर्द केन्द्रित है, वे इतने विविध और समृद्ध इतने शक्तिशाली और इतने सुक्ष्म, इतने गूढ़/जटिल और फिर भी इतने ज्वलंत है कि 'हिंदुत्व' शब्द विश्लेषण के सभी प्रयासों से परे है। यह आज जिस रूप में हैं, उसे इस रूप में ढ़ालने के लिए 40 (चालीस) शताब्दियाँ लगी है। धर्म प्रर्वतकों और कवियों,

विधि– वेत्ताओं और कानून निर्माताओं, नायकों और इतिहासकारों ने इस पर सदियों तक विचार किया, इसे जिया, इसके लिए लड़ें, वास्तव में, क्या यह हमारी पूरी जाति के अनगिनत कार्यों का परिणाम नहीं है? हिंदुत्व एक शब्द मात्र नहीं है, बल्कि एक इतिहास है। यह न केवल हमारे लोगों का आध्यात्मिक या धार्मिक इतिहास है। बल्कि यह अपने आपमें सम्पूर्ण इतिहास है हिंदू धर्म हिंदुत्व का केवल एक हिस्सा है, अंश है।

हिन्दू राष्ट्र का निर्माण के विषय में सावरकर जी का कहना था कि "हिंदू, 'हिंदी', 'हिन्दुस्तानी' और इण्डियन शब्दों को उनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में देखा जाए तो इन सभी की उत्पत्ति सिंधू जिसे अंग्रेजी में इंडस कहा जाता है, से हुई है। प्राचीन सिंधू घाटी सभ्यता से ही भारतीय उपमहाद्वीपों में सिंधू नदी के तटों पर मानव बसाहटों से इसका संबंध रहा है। सावरकर जी ने हिंदू राष्ट्र को प्राचीन और सतत् परम्परा के रूप में व्याख्यायित करते हुए इसे उत्तरी सीमा पर स्थित हिमालय की तरह ठोस और अति विशाल बताया है। और कहा है, पूर्व में वैदिक काल से लेकर हमारे पूर्वज, हमारे लोगों को धार्मिक, वंशीय, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप में आकार देते हैं। इस सब के परिणाम स्वरूप वैदिक काल के सिंधू व्यवस्थित रूप से बढ़ते हुए आज हिंदू राष्ट्र में विकसित है, भारत में फैले हुए हैं और भारत को अपनी पितृभूमि एवं उनकी पूज्य भूमि के रूप में साझा कर रहे हैं। विश्व का कोई भी अन्य राष्ट्र, संभवतः चीन को छोड़ दे तो हमारे हिंदू राष्ट्र के समान जीवन और विकास की ऐसी निरंतरता और अखण्डता का दावा नहीं कर सकता। हिन्दू राष्ट्र का उद्भव और विकास, कुकुरमुत्तों की तरह अचानक नहीं हुआ। यह किसी समझौते के फलस्वरूप उत्पन्न नहीं हुआ है यह कोई कागजों का खेल नहीं है इसे व्यवस्थित करने के लिए काँट छाँट नहीं की गई। यह अपरिचित, अस्थायी नहीं है यह इसी मिट्टी से पैदा हुआ है और इसी मिट्टी में इसकी जड़ें गहरे तक जमी और दूर–दूर तक फैली हुई हैं।"

'भारत' और 'हिंदुत्व' को श्रीमती एनी बेसेंट एक दूसरे के पर्याय मानती थीं। अपने एक भाषण में उन्होंने हिन्दूओं से कहा था कि– "भारत और हिंदुत्व की रक्षा भारतवासी और हिन्दू ही कर सकते हैं। हम बाहरी लोग आपकी चाहे जितनी भी प्रशंसा करें, किन्तु आपका उद्धार आपके ही हाथ में हैं हिंदुत्व के बिना भारत के सामने कोई भविष्य नहीं है। हिंदुत्व ही वह मिट्टी है, जिसमें भारत वर्ष का मूल गढ़ा हुआ है। यदि यह मिट्टी हटा ली गई तो भारत रूपी वृक्ष सूख जाएँगा, भारत में प्रश्रय पाने वाले अनेक धर्म है, अनेक जातियाँ है, किन्तु इसमें से किसी को भी शिरा भारत के अतीत तक नहीं पहुँची है। इनमें से किसी में भी यह दम नहीं है कि भारत को वे एक राष्ट्र के रूप में जीवित रख सकें। इनमें से प्रत्येक भारत से विलीन हो जाए, तब भी भारत, भारत ही रहेगा। किन्तु यदि हिंदुत्व विलीन हो गया तो क्या शेष रहेगा? तब, शायद, इतना याद रह जाएगा कि भारत नाम का कोई भौगोलिक देश था। भारत के इतिहास को देखिए, उसके साहित्य, कला ओर स्मारकों को देखिए, सब पर हिंदुत्व, स्पष्ट रूप से खुदा हुआ है।"

हिन्दुत्व का विचार अखण्ड भारत की एक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आवाज है, जो देश की धार्मिक परंपराओं को दर्शाता है। "यह एक जीवन पद्धति है ना कि कोई पंथ। यह वास्तविकता का अनुसरण करता है। और यह विश्व को नास्तिक व आस्तिक नामक खेमों में बांटने वाला दर्शन भी नहीं है। यह जिसे प्रधानता देता है वह है 'व्यक्तिगत अनुभव'। साथ ही यह ऐसे व्यक्तियों के दावों को भी स्वीकार नहीं करता जो सत्य के नाम पर एकमात्र अधिकारी कहलाए। वास्तव में हिन्दुत्व का धार्मिक सिद्धांत ही यही है कि यह किसी धार्मिक सिद्धांत या मत को नहीं स्वीकारता है। इसमें अपने दार्शनिक मूल को

अक्षुण्ण रखते हुए परस्पर विरोधी विचारों व विश्वास प्रणालियों को समायोजित व आत्मसात करने की अदम्य शक्ति है। इसके सामने आने वाले नित नए विचारों का भी यह खुले दिल से स्वागत करता है।"

राष्ट्रीयता एक भूखण्ड व निश्चित भौगोलिक इकाई में निवास करने वाले उन सब निवासियों की सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतीक है जो एक सत्ता और शासन के अधीनस्थ अपनी पहचान बनाए रखते हैं "वे राज्य या राष्ट्र से प्रेम ही नहीं करते, उसकी स्वतंत्रता व स्वायत्ता के लिए मर–मिटने को उद्यत भी होते हैं वे अपने राष्ट्र की बेहतरी के लिए खून और पसीना बहाते हैं, उसकी प्रगति के लिए संकल्प और समर्पण का सहारा लेते हैं। उसके प्राकृतिक सौन्दर्य से अभिभूत होते है, खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार, रीति–नीति, पर्व–उत्सव व्रत–त्योहार, मेले–ठेले, लोकविश्वास, अध्यात्म, साहित्य, कला के प्रति गौरवान्वित होते हैं राष्ट्र के प्रति यही भक्ति–भावना राष्ट्रीयता कहलाती है। जो संकट के समय लोगों को जोड़े रखती है। परतंत्रता से मुक्ति का पथ प्रशस्त करती है। राष्ट्रीयता का आशय राष्ट्र में रहने वाले उन जन–मन–गण से है जो सामूहिक रूप से राष्ट्र के हित–चिंतन में संलग्न रहते हैं। राष्ट्र की गौरव गाथा और वंदना के समानांतर उसके निवासियों से प्रेम, पशु–पक्षियों के साथ नदी–नालों सागर, व पर्वतों से प्यार, संस्कृति व लोक जीवन से दुलार, राष्ट्र की प्रगति में योगदान देने वाले महापुरुषों से अनुरक्ति, संतों, वैज्ञानिकों, कलाकारों व साहित्यकारों से आसक्ति, राजनीतिक व सामाजिक हलचलों से संपृक्ति और इसकी अस्मिता को क्षति पहुँचाने वालों के प्रति विरक्ति और आक्रोश राष्ट्रीयता की पहचान हैं।"

ऐसे महान, वीर पुरुष का व्यक्तित्व और कर्तव्यनिष्ठा आज भी हमारे लिए एक पथ प्रदर्शक का कार्य करती है।

संदर्भ

1. वीर सावरकर, प्रकाशक रवि प्रकाशन, पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 5–7.
2. भारत के अमर क्रान्तिकारी, वीर सावरकर, सं. डॉ. भवानी राणा.
3. सावरकर समग्र, स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर, सौ. हिमानी सावरकर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिन्दू गौरव, वीर विनायक दामोदर सावरकर, सं. पं. सत्यनारायण शर्मा, प्र. शिलालेख प्रकाशन, पब्लिशर्स, दिल्ली.
5. हिन्दुत्व, सं. विनायक दामोदर सावरकर, प्रकाशन प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 14–15.
6. विनायक दामोदर सावरकर 'हिंदूत्व' प्रभात प्रकाशन, दिल्ली.
7. संस्कृति के चार अध्याय, 'रामधारी सिंह दिनकर' लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 411–412.
8. बदलते दौर में हिंदुत्व, जे. नंदकुमार इंडस स्क्रॉल्स भाषा, 2019, पृष्ठ 4–8
9. हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि– डॉ. विनय कुमार पाठक, मित्तल एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ 40